बिहार विधान सभा वादवृत्त

मंगलवार तिथि ३ अक्तूबर १९५०

भारत के संविधान के उपबन्ध के अनुसार एकत्र विधान सभा का कार्य विवरण ।

सभा का अधिवेशन रांची के सभा-वेश्म में मंगलवार तिथि ३ अक्टूबर १९५० को २ बजे मध्याह्न में माननीय अध्यक्ष श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद वर्म्मा के सभापतित्व में हुआ ।

अल्पसूचना प्रश्नोत्तर

SHORT NOTICE QUESTION

SHORT NOTICE QUESTION NO. 2 AND 3

THE HON'BLE DR. SAIYID MAHMUD : The answer is not ready today as the Parliamentary Secretary is absent today. It may be postponed.

THE HON'BLE DR. SAIYID MAHMUD : The answer is not ready today. It may be postponed today.

SHRI RAMESHWAR PRASAD SINGH (GAYA) : When we are expected to get replies to these questions ?

THE HON'BLE SPEAKER : The replies to these short notice

ARRANGEMENT FOR TRACTORS IN THE DISTRICTS OF BIHAR.

'A A' * 129. SHRI HARIVANS SAHAY : Will the Hon'ble Minister for the Development Department be pleascd to state whether there is any arrangement within the districts of Bihar for the repairs of tractors that need such repairs in course of their working ?

THE HON'BLE DR. SAIYID MAHMUD : There are two private firms, viz. Messrs, Arthur Butler & Co. and Messrs. Fair weather Co., at Muzaffarpur and one recently started factory at Ghatsila in the district of Singhbhum where tractors are repaired. There is no special arrangement for repairs of tractors in the other districts of Bihar.

श्री हरिवंश सहाय : ३७ ट्रैक्टर खरीदे गये, उनमें से ६ बेकार हैं। उनको बीमारी पकड़ेगी, इसका ख्याल कर उनके इलाज के लिए शुरू से ही क्यों नहीं इन्तजाम किया गया ?

माननीय डा० सैयद महमूद : इसके बारे में बहुत सवालात पूछे जाते हैं इसलिए मैं इसका इतिहास बता देता हूं। Mechanical farming हिन्दुस्तान में एक नयी चीज है, और उसमें भी एक technical चीज है, इसलिए इसमें बहुत सी गलतियां होंगी ही। जैसे-जैसे इसका तजरबा होगा वैसे-वैसे इसको सुधारने का इन्तजाम किया जायेगा। ट्रैक्टर में जो plough होता है वह बहुत जल्द टूट जाता है और हिन्दुस्तान में नहीं मिलता है। जहां की जमीन मुलायम होती है वहां तो ठीक से चलता है मगर सख्त जमीन होने से खराब हो जाता है। इधर छोटानागपुर में तो वह ५—६ दिन भी नहीं चल सकता है। यहां उसे बनाने की कोशिश की गयी थी लेकिन वह ज्यादा दिन तक नहीं चलता है। इसमें से बहुत से तो गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के जरिये खरीदे गये थे।

माननीय अध्यक्ष : शान्ति—शान्ति। गवर्नमेंट आफ इंडिया के जरिये मंगाया गया था लेकिन दाम तो इस राज्य की सरकार को ही देना पड़ा होगा।

माननीय डा० सैयद महमूद : जी हां। १९४६ में गवर्नमेंट आफ इंडिया ने order दिया था और १९४८ में ट्रैक्टर आये लेकिन उनके साथ implement

* 'AA'. Postponed from the 12th September 1950.

नहीं आये। जब इसके बारे में उसे लिखा गया तो वहां से हुक्म आया कि तुम बाजार में खरीद लो। लेकिन हिन्दुस्तान में कहीं नहीं मिला। इसके बाद manufacturer को लिखा गया तब दो चार करके आया और जैसे २ आता गया, काम शुरू हुआ। उसमें एक गलती यह हुई कि ट्रैक्टर खरीदने के समय यह condition जरूर रखना चाहिए था कि implement और spare parts देना होगा। इसके अलावे guarantee भी लेनी चाहिए थी। ख्याल था कि spare parts वहां मिल जायेंगे लेकिन खोजने पर नहीं मिले। तजरबे से यह पता चला है कि जिस तरह से काम हो रहा है, इस स्कीम में नाकामयाबी होगी। इस समय mechanised farming का शौक सब को हो गया है और एक जिले में सौ ट्रैक्टर रहे तब काम चलेगा। एक ट्रैक्टर क्या २० ट्रैक्टर जिले पीछे रखने से भी काम नहीं चलेगा। इसलिए यह तय किया गया कि इस स्कीम को बंद किया जाय और जितने ट्रैक्टर हैं उन्हें पुर्णियां में State Farming में transfer कर दिया जाय या दूसरे लोगों के हाथ बेच दिया जाय।

माननीय अध्यक्ष : सवाल इसी गरज से पूछा गया था कि सरकार समझ जाय कि गलत काम हुआ है। इस पर और ज्यादा कहने की कोई जरूरत तो नहीं मालूम होती है।

माननीय डा० सैयद महमूद : इसके बारे में हमेशे सवाल पूछा जाता है, इसलिए इसके बारे में तफसील से कह देना चाहता हूँ, जिसमें आइन्दे कोई सवाल नहीं पूछा जाय।

माननीय अध्यक्ष : जब ट्रैक्टर देने का काम बन्द हो गया तब कोई सवाल क्यों उठेगा।

माननीय डा० सैयद महमूद : ट्रैक्टर देने का काम बन्द कर रहे हैं। मगर १५ लाख रु० का एक fund कायम किया जा रहा है जिसमें...

माननीय अध्यक्ष : अब इसको यहां कहने की जरूरत नहीं है जब इसके बारे में सवालात खतम हो गये।